समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

• प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२३ • वर्ष : २७ • अंक : ०३ (निरंतर अंक : ३१५) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य बापूजी का ६०वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस

१६ अक्टूबर

अपने आत्मस्वरूप के अनुभव के लिए

तीन मार्ग बताये गये हैं : भक्तियोग, कर्मयोग और ज्ञानयोग । किन्हीं ब्रह्मानुभवी सद्गुरु की शरण प्राप्त कर मनुष्य किसी भी एक मार्ग को अपना के अथवा तीनों मार्गों का समन्वय करके इस सर्वोच्च पद को प्राप्त कर सकता है ।

पढ़ें पृष्ठ ३

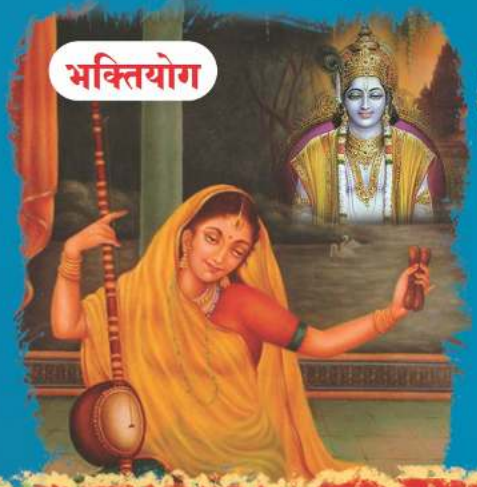

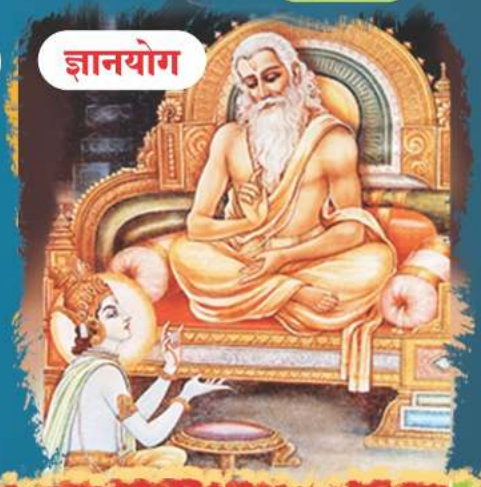

पूर्णता के लिए ३ कृपाओं की आवश्यकता...

« ईश्वरकृपा

ईश्वरकृपा से मनुष्य-देह की प्राप्ति

शास्त्रकृपा »

शास्त्र का अवलम्बन लेने से मुमुक्षुत्व की प्राप्ति

गुरुकृपा »

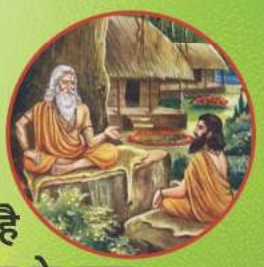

और जब मोक्ष की आकांक्षा तीव्र बनती है तब परमात्मा स्वयं गुरु के रूप में आ मिलते हैं ।

दुर्लभं त्रयमेवैतद्दैवानुग्रहहेतुकम् । मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः ।।

'भगवत्कृपा ही जिनकी प्राप्ति का कारण है वे मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व (मुक्त होने की इच्छा) और महान पुरुषों का संग ये तीनों ही दुर्लभ हैं ।' (विवेक चूड़ामणि : ३)

लेख पढ़ें पृष्ठ ३

आशारामजी बापू पूर्णतया निर्दोष हैं

- स्वामी श्री अक्षयानंदजी महाराज, भागवत कथाकार, हरिद्वार ६

अब विज्ञान भी दे रहा उपवास करने की सलाह १२

पित्त-प्रकोप के कारण, लक्षण और निवारण १४

नौकरी व व्यापार में आ रही बाधाएँ दूर करने हेतु विजयादशमी को करें यह प्रयोग १६

तुम्हारे लिए परमात्मा सर्वस्व हो - पूज्य बापूजी

ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा। परमात्मा के सिवाय किसी भी वस्तु में, व्यक्ति में... कहीं भी प्रीति की तो अंत में पश्चात्ताप के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगेगा। सब धोखा देंगे, देखना ! हमारी बात अभी तुमको अच्छी नहीं भी लगे लेकिन है १०० प्रतिशत सत्य। ईश्वर के सिवाय किसीमें भी प्रीति की तो अंत में रोना ही पड़ेगा।

व्यवहार तो जगत के पदार्थों से करो, प्रेम भगवान से करो। संसार प्रेम करने योग्य नहीं है, वस्तुएँ प्रेम करने योग्य नहीं हैं, प्रेम करने योग्य तो परमात्मा है। मोह रखो तो परमात्मा में रखो, प्रीति करो तो परमात्मा से करो, लड़ाई करो तो परमात्मा से करो, उलाहना दो तो परमात्मा को दो। तुम्हारे लिए परमात्मा सर्वस्व होना चाहिए। 'भगवान को उलाहना दें ?' हाँ ! कम-से-कम उस बहाने भी उसकी याद रहेगी तो भी बेड़ा पार हो जायेगा। 'तू तो सबके हृदय में छुपा है और फिर प्रकट नहीं होता ! मुझमें इतनी अक्ल नहीं है कि मैं तुझे प्रकट कर सकूँ। तू करुणा नहीं करेगा तो कैसे होगा ?' ऐसा करके उसको उलाहना दो। हृदय में उसके साथ गुनगुनाहट करो, प्रार्थना करो। प्रार्थना नहीं कर सकते तो कम-से-कम फरियाद करो कि 'तू सद्बुद्धि तो दे नाथ ! जीवन बीता जा रहा है। श्वासोच्छ्वास में आयुष्य खत्म हो रहा है। न जाने कब काल झपेट ले, मौत कब गला दबा दे कोई पता नहीं। हम मौत के मुँह में पड़ें उसके पहले तेरी शरण तक तो पहुँच जायें। अर्थी पर रखकर हमारी श्मशान यात्रा निकाली जाय उससे पहले ही हम जन्म-मरण के अनर्थ से बच जायें। हम अर्थी पर चढ़ें उसके पहले परम अर्थ को समझ लें, उसका अनुभव कर लें नाथ !' ऐसा करके उसको हृदयपूर्वक प्रार्थना करो, देखो कितना सहयोग मिलता है !

ॐ... ॐ... ॐ...

लोक कल्याण सेतु

मासिक प्रकाशन

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २७ अंक : ३ (निरंतर अंक : ३१५)
प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२३ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org, *ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार.....४
- सँवरे कारज उलझ गये, बिगड़े कारज सँवर गये..... ६
- यहाँ डूबने पर भी मृत्यु का भय नहीं..... ७
- बंधन और दुःख का मूल कारण.....८
- गांधीजी ने आजादी का संदेशा नहीं दिया..... ९
- साधन का एक बड़ा विघ्न..... ११
- स्वामी के यश को बढ़ानेवाली विलक्षण प्रेमाभक्ति.. १३
- अब विज्ञान भी दे रहा उपवास करने की सलाह.....१५
- पित्त-प्रकोप के कारण, लक्षण और निवारण..... १७
- आशारामजी बापू पूर्णतया निर्दोष हैं.....१८
- नारकीय जीवन से उबारा - बाबूलाल चौहान.....१९
- इसलिए तू राम भजन कर - संत नामदेवजी..... १९
- विजयादशमी के दिन करें यह प्रयोग.....१९
- संतों की बात-बात में बात.....२१
- तभी ठोस लाभ होता है.....२३
- इसलिए तुम वास्तविक घर से बिछुड़ गये हो..... २४
- जब तुम्हीं ध्यान में आ जाते... - संत पथिकजी.....२४

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

अनादि TV — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १०-०० बजे

Asharamji Bapu

सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram

Mangalmay Digital

यूट्यूब चैनल्स

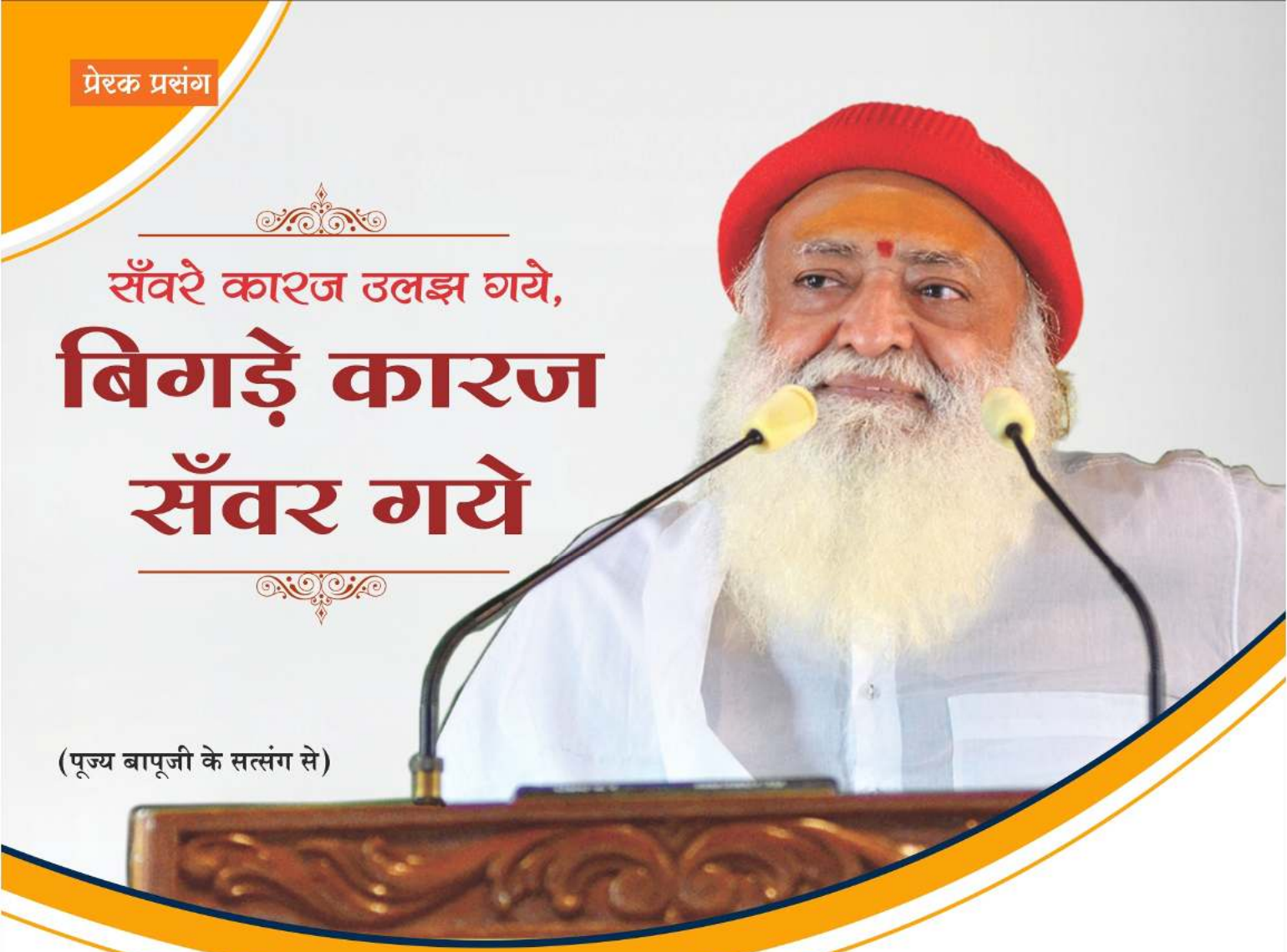

सँवरे कारज उलझ गये,

बिगड़े कारज सँवर गये

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

महापुरुषों द्वारा ऐसी घटनाएँ घटती हैं कि लोग कभी-कभी थोड़ा-बहुत समझ पाते हैं, बाकी भगवान और भगवान को पाये हुए संतों को समझना मनुष्यबुद्धि का काम नहीं है। सुखमनी साहिब में आता है :

ब्रह्म गिआनी की मिति१ कउनु बखानै ॥
ब्रह्म गिआनी की गति ब्रह्म गिआनी जानै ॥
ब्रह्म गिआनी मुकति२ जुगति३
जीअ४ का दाता ॥
ब्रह्म गिआनी पूरन पुरखु५ बिधाता ॥
ब्रह्म गिआनी का कथिआ
न जाइ अधाख्यरु ॥६
ब्रह्म गिआनी सरब७ का ठाकुरु८ ॥

दुनिया सारी रूठ जाय, भगवान भी रूठ जायें परंतु ब्रह्मज्ञानी गुरु से नाता जुड़ा रहे। गुरु से नाता टूटा तो कहीं का नहीं रहेगा। मैं नहीं चाहता हूँ किसीका बुरा हो लेकिन लोग ऐसे... वर्षों पहले की बात है, मैं अहमदाबाद आश्रम की मोक्ष कुटिया में खड़ा था। लोग दर्शन करने आये थे। किसीने कहा : ''साँईं ! मेरे लड़के का रिश्ता नहीं होता है, जरा कृपा करो।''

मैंने कहा : ''कैसी लड़की चाहिए ?''

''साँईं ! आप जिससे भी कराओ।''

''भले काली हो ?''

''साँईं ! मंजूर है।''

''दहेज नहीं मिले तो ?'' मैंने उसको टटोला।

साधन का एक बड़ा विघ्न

आजकल प्रतिकूल परिस्थितियों का कारण बताकर विशेषकर भगवद्-भजन एवं सत्कार्यों को भविष्य पर डालने की मनोवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। इससे मनुष्य-जीवन में प्राप्त हो सकनेवाले महान लाभ से वंचित होकर यह अनमोल जीवन व्यर्थ गँवाने की प्रवृत्ति में वृद्धि हो रही है। इस व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोष तथा उसके निवारण का विवेचन करते हुए श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजी कहते हैं :

तुम जो यह सोचते हो कि 'मेरी आर्थिक स्थिति ऐसी हो जायेगी तब मैं भजन-स्मरण करूँगा या जीवन का अमुक काम पूरा हो जायेगा, अमुक दायित्व से मैं मुक्त हो जाऊँगा, अमुक व्यापार में सफलता प्राप्त कर लूँगा, अमुक प्रकार के गुरु मिल जायेंगे, अमुक प्रकार का एकांत सुंदर स्थान मिलेगा और उसमें सुंदर सात्त्विक आश्रम बना के रहूँगा, तब भजन-स्मरण करूँगा' - सो यह तुम्हारे मन का धोखा है।

जो काम तुम वर्तमान अवस्था में नहीं कर सकते, किसी कमी को पूर्ण कर लेने के बाद करना चाहते हो, वह भविष्य में अमुक अवस्था प्राप्त होने पर कर सकोगे इसका क्या विश्वास है ? कमी का अनुभव तो वहाँ भी होगा। तब उस कमी की पूर्ति की प्रतीक्षा में भजन को टाल दोगे।

तुम्हारी मनचाही स्थिति मिल ही जायेगी, इसका कोई निश्चय नहीं है। यह भी सम्भव है कि वैसी स्थिति की प्रतीक्षा-प्रतीक्षा में ही तुम्हारा शरीर छूट जाय। तुम्हारे चाहने से अमुक स्थिति नहीं मिल सकती। प्रत्येक सांसारिक परिस्थिति-भोग पूर्व-कर्मानुसार मिलता है। इसलिए यदि किसी स्थिति की, वस्तु की प्रतीक्षा में रहोगे तो भजन बनेगा ही नहीं। इस प्रतीक्षा को साधन का एक बड़ा विघ्न समझो।

पूर्व-कर्मवश, मंगलमय भगवान के मंगल-विधान के अनुसार जो परिस्थिति तुम्हें मिली है, जरा भी देर न करके उसी परिस्थिति में जीवन के असली कार्य भगवान के भजन-स्मरण को आरम्भ कर दो और उसे बढ़ाते चले जाओ।

जो भजन करना चाहता है उसको

स्वामी के
यश को बढ़ानेवाली

विलक्षण प्रेमाभक्ति

- स्वामी अखंडानंदजी

राम परम तत्त्व परमार्थ हैं। भरतजी श्रीरामजी के नित्य दास हैं। जैसे राम प्रसन्न हों – चाहे संयोग से या वियोग से, उनकी अपनी कोई प्रसन्नता नहीं है, राम की प्रसन्नता ही उनकी प्रसन्नता है। ननिहाल में भेज दें तो ननिहाल में रहें और नगर में छोड़कर वन में चले जायें तो नगर में रहें। तपस्या करावें तो तपस्या करें, युवराज बनावें तो युवराज बनें। सोलहों आने अनुगत (अनुयायी) हैं भरतजी।

लक्ष्मणजी इन सबसे विलक्षण हैं। लक्ष्मणजी प्रेमी भक्त हैं। भरतजी में अनुगति प्रकट हुई है और लक्ष्मणजी में प्रेम प्रकट हुआ है। ऐसी-ऐसी जगह पर वे रामजी की रक्षा करते हैं जहाँ रामजी स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकते। सीता-स्वयंवर के समय श्रीरामजी ने जब शिवजी का धनुष तोड़ दिया तब परशुरामजी धनुष तोड़नेवाले से नाराज होकर उसको मारने के लिए आये थे। लक्ष्मणजी बीच में ऐसे कूद पड़े कि परशुरामजी का गुस्सा रामजी की ओर न जाकर लक्ष्मणजी की ओर आ गया। रामचन्द्रजी की ओर जानेवाला गुस्सा बलात् अपनी ओर खींच लेने का चातुर्य, ऐसा प्रेम अगर किसीने दिखाया तो लक्ष्मणजी ने।

परशुरामजी बोले : ''कौन है धनुष तोड़नेवाला ? लाओ हमारे सामने !''

तब लक्ष्मणजी बोले : **''बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं।...** हम लोग बाँस की शाखा की खपची

पित्त-प्रकोप

के कारण, लक्षण और निवारण

मसालेदार, चटपटे भोजन का अधिक सेवन, सरसों के तेल का अधिक उपयोग, अधिक मेहनत या मानसिक तनाव, समय पर न खाने-पीने-सोने से, गुस्सा करने से एवं शरद ऋतु में वातावरण के प्रभाव से पित्त बढ़ता है।

पित्त की समस्या से अपच, अम्लपित्त (hyperacidity), उलटी, भूख न लगना आदि पेट के रोग होते हैं तथा सिरदर्द, पीलिया, बवासीर, बार-बार पेशाब में संक्रमण होना, आँखों एवं हाथ-पैरों की जलन आदि तकलीफें होती हैं, साथ ही पुरुषों में स्वप्नदोष व महिलाओं में प्रदररोग जैसी समस्याएँ भी देखी जाती हैं।

पित्त का रामबाण इलाज

जीवनशैली सुधारना पित्त का रामबाण इलाज है। सरल व साधारण नियमों के पालन से पित्तदोष से बचा जा सकता है।

(१) शयनं पित्तनाशाय... पित्तनाश हेतु समय पर सो जायें, रात में जागरण न करें। रात्रि ९ से ३ बजे की नींद अच्छी मानी गयी है।

(२) मुलतानी मिट्टी लगाकर ठंडे पानी से स्नान करना एवं तैरना, नदी-किनारे एवं प्राकृतिक वातावरण में भ्रमण करना, मन को शांत एवं प्रसन्न रखना - ये सरल दिखनेवाले प्रयोग पित्त-शमन में बहुत लाभदायी हैं।

(३) भोजन हलका व सुपाच्य हो। भोजन में सीजनल फल व सब्जियों का उपयोग हो, खट्टी चीजें न खायें। पत्तेदार हरी सब्जियाँ, लौकी, कद्दू, गिल्की, परवल, गोभी जैसी रसदार सब्जियाँ, मूँग, अरहर की दाल, पुराना चावल, ककड़ी, खीरे का सलाद आदि का सेवन करें। पित्त को शांत करने में गाय का दूध, मक्खन और घी* लाभकारी होते हैं। इन्हें भोजन में उपयोग में ला सकते हैं।

संतों की बात-बात में ..... बात .....

एक सेठ था। सुख-सुविधा सम्पन्न होते हुए भी वह हमेशा बीमार रहता था। इससे उसकी पत्नी व बच्चे परेशान रहते थे।

एक दिन सेठ एक महात्मा के सत्संग में गया। सेठ के मन में शांति का अनुभव हुआ। उसने संतश्री को अपनी समस्या बतायी : ''महात्माजी ! मेरे पास सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं है, बस शरीर का स्वास्थ्य और मन की शांति नहीं है। कृपा करके आप मेरी मानसिक अशांति व बीमारियों का कारण और निवारण बतायें।''

संत बोले : ''सेठजी ! आप अपंग हैं अतः भूख न लगना, बीमारियों का शरीर में घर करना व मन का अशांत रहना स्वाभाविक ही है।''

महात्मा की बात सुनकर सेठ चौंका !

ज्यों केले के पात में, पात पात में पात।
त्यों संतन की बात में, बात बात में बात ॥

संत की बात रहस्यमयी थी, सेठ समझ नहीं पाया। हाथ जोड़कर नम्रता से बोला : ''स्वामीजी ! कृपया मुझे बतायें कि मेरे हाथ-पैर सही सलामत होते हुए भी मैं अपंग कैसे हूँ।''

संत ने करुणा-कृपा करते हुए कहा : ''अपंग केवल वह नहीं होता जिसके हाथ-पैर न हों बल्कि वह भी होता है जो हाथ-पैर होते हुए भी उनका सदुपयोग नहीं करता। आप तो हाथ-पैर होते हुए भी अपंग बने हुए हैं। आप अपना खुद का काम भी नौकरों से करवाते हैं। नौकरों की संख्या कम कर दें और स्वावलम्बी बनें। प्राणायाम, आसन, सत्संग श्रवण, ध्यान, जप करें। उचित खान-पान करें और अपनी दिनचर्या ठीक रखें। फिर देखना कुछ ही दिनों में आपको भूख खुलकर लगेगी, शरीर की बीमारियाँ भाग जायेंगी, मन की अशांति मिट जायेगी और अंतरात्मा का प्रकाश होने लगेगा।''

संत की बात शिरोधार्य करते हुए सेठ ने उसी दिन से अपना काम स्वयं करना शुरू कर दिया। संतश्री के बताये अनुसार दिनचर्या बना ली और सत्संग, ध्यान एवं परोपकार के कार्यों में भी समय

मुक्ति का सहज मार्ग

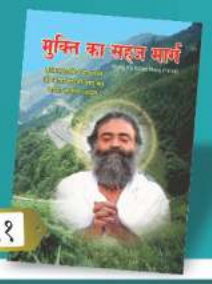

इसमें आप पायेंगे : ❋ सहज सुख व परम शांति के द्वार खोलने की युक्ति ❋ जीवन को रसमय बनानेवाले ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के सत्संग की महिमा ❋ विषयों की आसक्ति छुड़ाकर आत्मज्ञान के दिव्य मार्ग पर अग्रसर करनेवाली प्रेरक कथाएँ

₹ ११

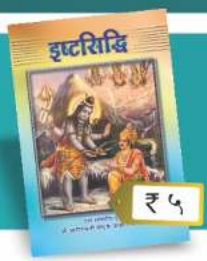

₹ ५

इष्टसिद्धि

इसमें आप पायेंगे : ❋ इष्टसिद्धि कैसे हो ? ❋ मंत्र-अनुष्ठान की आवश्यकता और उसकी विधि ❋ वास्तविक पूजन क्या है और उसे कैसे करें ? ❋ दुःखों और क्लेशों को सदा के लिए नष्ट करनेवाली साधना ❋ मंत्र-महिमा को उजागर करती प्रेरक कथाएँ

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य, पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

₹ ७५
७०० मि.ली.

आँवला रस

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है । इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है ।

पुनर्नवा अर्क

पुनर्नवा अर्क शरीर के कोशों को नया जीवन प्रदान करनेवाली श्रेष्ठ रसायन-औषधि है । यह गुर्दों (kidneys) व यकृत (liver) के समस्त रोग, पेट के रोग, सूजन, रक्ताल्पता, पीलिया, आमवात, संधिवात, बवासीर, भगंदर, दमा, खाँसी, गुर्दों व पित्ताशय की पथरी, मधुमेह (diabetes), स्त्रीरोग, त्वचा-विकार, हृदयरोग व नेत्र-विकारों में बहुत लाभदायी है ।

₹ ३५
२१० ग्राम

₹ ६५
१०० मि.ली.

सदाबहार तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी है । यह बालों को काला, चमकदार तथा घना बनाने में सहायक है । टालवालों को (गंजे लोगों को) भी बाल आ जायें यह इसकी खास विशेषता है ।

लीवर टॉनिक सिरप व टेबलेट

सभी प्रकार के यकृत-विकार (liver disorders), खून की कमी, पीलिया, रक्त-विकार, कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, पेटदर्द तथा गैस में अत्यधिक लाभप्रद ।

₹ ३५
१३० ग्राम

₹ ८०
४० ग्राम

दाँतों के लिए लाभदायी विशिष्ट औषधियों से बना

दंतमंजन

यह आपके दाँतों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है । दाँतों को साफ करता है एवं मसूड़ों को मजबूत रखता है । इसके उपयोग से मसूड़ों की सूजन, मसूड़ों से खून निकलना, दाँतों का दर्द, दाँतों का हिलना, दाँतों की सड़न आदि दंत-रोगों से रक्षा होती है ।

₹ ५०
१०० ग्राम

₹ ९०
५०० ग्राम

सेब जाम

यह स्वादिष्ट जाम पोषक तत्त्वों से भरपूर है । हृदयरोग, शारीरिक व मानसिक कमजोरी, खून की कमी (anaemia), टी.बी., भूख की कमी व कब्ज को दूर करता है । मस्तिष्क को पोषण देकर स्मृतिनाश से रक्षा करता है । यह कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को घटाने में मदद करता है ।

स्मृति व दिमागी शक्ति वर्धक रसायन

शंखपुष्पी सिरप

मानसिक तनाव, थकावट, अनिद्रा आदि में लाभदायी ।

₹ ५५
२६० ग्राम

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between
18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२४)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवादार भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (वॉल कैलेंडर) पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : **www.ashramestore.com/calendar** सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य ₹ १५ मात्र। ८ कैलेंडर लेने पर ₹ २० की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ १००!
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १५.५० तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १४.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

स्वतंत्रता दिवस पर युवा सेवा संघ द्वारा निकाली गयीं देशभक्ति यात्राएँ

सुषुप्त योग्यताओं को विकसित करनेवाले विविध यौगिक प्रयोग सीखते विद्यार्थी

सुसंस्कारप्रद सामग्री से युक्त नोटबुकों का निःशुल्क वितरण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन लोक कल्याण सेतु, ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन की सदस्यता हेतु स्कैन करें :

Lok Kalyan Setu Rishi Prasad Rishi Darshan

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी